23 जनवरी

प्रणाम का महत्व

महाभारत का युद्ध चल रहा था - एक दिन दुर्योधन के व्यंग्य से आहत होकर 'भीष्म पितामह' घोषणा कर देते हैं कि मैं कल पांडवों का वध कर दूंगा। उनकी घोषणा का पता चलते ही पांडवों के शिविर में बेचैनी बढ़ गई। भीष्म की क्षमताओं के बारे में सभी को पता था, इसलिए सभी किसी अनिष्ट की आशंका से परेशान हो गए तब श्री कृष्ण ने द्रौपदी से कहा कि अभी मेरे साथ चलो। श्री कृष्ण, द्रौपदी को लेकर सीधे भीष्म पितामह के शिविर में पहुँच गए। शिविर के बाहर खड़े होकर उन्होंने द्रोपदी से कहा कि अंदर जाकर पितामह को प्रणाम करो। द्रौपदी ने अंदर जाकर पितामह भीष्म को प्रणाम किया तो उन्होंने अखंड सौभाग्यवती भव का आशीर्वाद दे दिया, फिर उन्होंने द्रौपदी से पूछा कि वत्स तुम इतनी रात में अकेली यहाँ कैसे आई हो, क्या तुमको श्री कृष्ण यहाँ लेकर आए हैं? तब द्रौपदी ने कहा कि हाँ, और वे कक्ष के बाहर खड़े हैं। तब भीष्म भी कक्ष के बाहर आ गे और दोनों ने एक दूसरे से प्रणाम किया। भीष्म ने कहा मेरे एक वचन को मेरे ही दूसरे वचन से काट देने का काम श्री कृष्ण ही कर सकते हैं। शिविर से वापस लौटते समय श्री कृष्ण ने द्रौपदी से कहा कि तुम्हारे एक बार जाकर पितामह को प्रणाम करने से तुम्हारे पतियों को जीवनदान मिल गया है। अगर तुम प्रतिदिन भीष्म, धृतराष्ट्र, द्रोणाचार्य आदि को प्रणाम करती होती और दुर्योधन-दुःशासन आदि की पत्नियाँ भी पांडवों को प्रणाम करती होती तो शायद इस युद्ध की नौबत ही न आती।

तात्पर्य- वर्तमान में हमारे घरों में जो इतनी समस्याएँ हैं उनका भी मूल कारण यही है कि जाने-अनजाने अक्सर घर के बड़ों की उपेक्षा हो जाती है। यदि घर के बच्चे और बहुएँ प्रतिदिन घर के सभी बड़ों को प्रणाम कर उनका आशीर्वाद ले तो शायद किसी भी घर में कभी कोई क्लेश न हो। बड़ों के दिए आशीर्वाद कवच की तरह काम करते हैं, उनको कोई अस्त्र-शस्त्र नहीं भेद सकता।

निवेदन - सभी इस संस्कृति को सुनिश्चित कर नियमबद्ध करें तो घर स्वर्ग बन जाए।

प्रेरक प्रसंग

सुभाषचंद्र बोस के घर के सामने एक बूढ़ी भिखारिन रहती थी। वे देखते थे कि वह हमेशा भीख मांगती थी और दर्द साफ दिखाई देता था। उसकी ऐसी अवस्था देखकर उसका दिल दहल जाता था। भिखारिन से मेरी हालत कितनी अच्छी है यह सोचकर वे स्वयं शर्म महसूस करते थे। उन्हें यह देखकर बहुत कष्ट होता था कि उसे दो समय की रोटी भी नसीब नहीं होती। बरसात, तूफान, कड़ी धूप और ठंड से वह अपनी रक्षा नहीं कर पाती।

यदि हमारे समाज में एक भी व्यक्ति ऐसा है कि वह अपनी आवश्यकता को पूरा नहीं सकता तो मुझे सुखी जीवन जीने का क्या अधिकार है और उन्होंने ठान लिया कि केवल सोचने से कुछ नहीं होगा, कोई ठोस कदम उठाना ही होगा।

सुभाष के घर से उसके कॉलेज की दूरी 3 किलोमीटर थी। जो पैसे उन्हें खर्च के लिए मिलते थे उनमें उनका बस का किराया भी शामिल था। उस बुढ़िया की मदद हो सके,, इसलिए वह पैदल कॉलेज जाने लगे और किराए के बचे हुए पैसे वह बुढ़िया को देने लगे।

ज्ञान गंगा

येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुविभारभूता मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।

जिन लोगों के पास विद्या, तप, दान, शील, गुण और धर्म नहीं होता। ऐसे लोग इस धरती के लिए भार हैं और मनुष्य के रूप में जानवर बनकर घूमते हैं।

वृत्तं यत्नेन संरक्षेद् वित्तमेति च याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः।।

चरित्र को बड़े प्रयत्न से संभालना चाहिए, धन तो आता है और जाता है। धन के नष्ट होने से कुछ नष्ट नहीं होता है, चरित्र से नष्ट हुआ तो मर जाता है।

बूझो तो जानें...

1. एक सुई दरजी के हाथ में ऐसे कमाल की जो कपड़े सिलाई के काम न आई।
2. ऊपर भी जाती है नीचे भी जाती है पर अपने जगह से हिलती नहीं है।

उत्तर अगले अंक में –

निवेदन

सभी अभिभावकों से हमारा अनुरोध है कि घर में बच्चों, युवाओं तक इन सामग्री को पहुँचाएँ एवं यह सुनिश्चित करें कि वह इनका पठन-पाठन करें। बच्चों द्वारा इन विषयों पर उनकी सम्मति विशेष रूप से आमंत्रित है। अंक में समाहित ज्ञान गंगा एवं अन्य विषयों पर बच्चों एवं युवकों की राय की प्रतीक्षा रहेगी। यह प्रयास तभी सफल होगा जब प्रत्येक घर में अभिभावक एवं बच्चे इन विषयों पर चर्चा करें एवं अपनी प्रतिक्रिया दें। बच्चों द्वारा भेजी गई तीन श्रेष्ठ राय पर पुरस्कार देने की भी योजना है। - **संपादक**

क्या है मकर संक्रांति?

सूर्य का मकर राशि में प्रवेश करना 'मकर संक्रांति' कहलाता है। इसी दिन से सूर्य उत्तरायण हो जाते हैं। शास्त्रों में उत्तरायण के समय को देवताओं का दिन तथा दक्षिणायन को देवताओं की रात कहा गया है। इस तरह मकर संक्रांति एक तरह से देवताओं की सुबह होती है। इस दिन स्नान, दान, जप, तप, श्राद्ध तथा अनुष्ठान का बहुत महत्व है। कहते हैं कि इस मौके पर किया गया दान सौ गुना होकर वापस फलीभूत होता है। मकर संक्रांति के दिन घी, तिल, कंबल, खिचड़ी दान का खास महत्व है।

ऐसी मान्यता है कि गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम पर तीर्थ राज प्रयाग में 'मकर संक्रांति' पर्व के दिन सभी देवी-देवता अपना स्वरूप बदलकर स्नान के लिए आते हैं। इस मौके पर इलाहाबाद (प्रयाग) के संगम स्थल पर हर साल लगभग एक मास तक माघ मेला लगता है, जहाँ लोग कल्पवास भी करते हैं। बारह साल में एक बार कुंभ मेला लगता है, यह भी लगभग एक महीने तक रहता है। इसी तरह 6 वर्षों में अर्धकुंभ मेला भी लगता है, मकर संक्रांति पर्व हर साल 14 जनवरी को पड़ता है। एक और प्रसिद्ध मेला बंगाल में मकर संक्रांति पर्व पर गंगा सागर में लगता है।

गंगा सागर के मेले के पीछे पौराणिक कथा है कि आज के दिन गंगा जी स्वर्ग से उतरकर भागीरथ के पीछे-पीछे चलकर कपिल मुनि के आश्रम में जाकर सागर में मिल गई। गंगा जी के पावन जल से ही राजा सगर के 60 हजार शापग्रस्त पुत्रों का उद्धार हुआ था। इसी घटना की स्मृति में इस तीर्थ का नाम गंगा सागर के नाम से विख्यात हुआ और हर साल 14 जनवरी को गंगा सागर में मेले का आयोजन होने लगा।

पंजाब, जम्मू-कश्मीर एवं हिमाचल प्रदेश में लोहड़ी के नाम से मकर संक्रांति पर्व मनाया जाता है। एक प्रचलित लोक कथा के अनुसार मकर संक्रांति के दिन कंस ने श्री कृष्ण को मारने के लिए लोहिता नाम की राक्षसी को गोकुल भेजा था। जिसे श्री कृष्ण ने खेल-खेल में ही मार डाला था। उसी घटना के फलस्वरूप लोहड़ी पर्व मनाया जाता है। सिंधी समाज भी मकर संक्रांति के पूर्व दिन इसे 'लाल लोही' के रूप में मनाता है। दक्षिण भारत में मकर संक्रांति को 'पोंगल' के रूप में मनाया जाता है। इसी दिन तिल, चावल, दाल की खिचड़ी बनाई जाती है। इस मौके पर बैलों की लड़ाई होती है, इसे मत्तु पोंगल भी कहते हैं। तमिलनाडु में तमिल पंचांग का नया साल पोंगल ही होता है।

राजस्थान की प्रथा के अनुसार इस दिन महिलाएँ तिल के लड्डू तथा चूरमें के लड्डू बनाकर सास-ससुर या दूसरे बड़े-बुजुर्गों को देती हैं और उनका आशीर्वाद लेती हैं। राजस्थान-हरियाणा में मुख्य रूप से दाल, बाटी, चूरमा, खीर-पूरी का भगवान को भोग लगाकर भोजन किया जाता है। कई जगहों पर विशाल दंगल का आयोजन भी किया जाता है। राजस्थान की राजधानी जयपुर में पतंग प्रतियोगिताएँ भी होती हैं। इसके अलावा दक्षिण बिहार के मदार क्षेत्र में भी एक मेला लगता है।

मकर संक्रांति के त्योहार का वर्णन जाने-माने ग्रंथों में भी मिलता है। **माघे मासे महादेवः यो दास्यति घृतकम्बलम। स भुक्त्वा सकलान भोगान अन्ते मोक्ष प्राप्यति।।**

मकर संक्रांति के दिन जो व्यक्ति कंबल और शुद्ध घी को दान के रूप में देता है, वह व्यक्ति अपने जीवन-मरण के संबंध से मुक्त होने के बाद मोक्ष प्राप्त करता है।

मकर संक्रांति के दिन गंगा स्नान और गंगा तट पर दान की खास महिमा है। तीर्थ राज प्रयाग में मकर संक्रांति मेला तो सारी दुनिया में विख्यात है। इसका वर्णन करते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी श्री रामचरित मानस में लिखा है **माघ मकरगत रबि जब होई। तीरथपतिहिं आव सब कोई।। देव दनुज किंनर नर श्रेनीं। सादर मज्जहिं सकल त्रिबेनीं।।**

माघ में जब सूर्य मकर राशि पर जाते हैं, तब सब लोग तीर्थराज प्रयाग को आते हैं। देवता, दैत्य, किन्नर और मनुष्यों के समूह सब आदरपूर्वक त्रिवेणी में स्नान करते हैं।

इस दिन सूर्य अपनी कक्षाओं में बदलाव कर दक्षिणायन से उत्तर तरफ होकर मकर राशि में प्रवेश करता है। जिस राशि में सूर्य की कक्षा का परिवर्तन होता है, उसे 'संक्रमण' या 'संक्रांति' कहा जाता है। मकर संक्रांति से सूर्य उत्तरायण हो जाने का मतलब इसे गरम मौसम की शुरुआत की तरह देखा जाता है।

गणतंत्र दिवस की परेड से जुड़े रोचक तथ्य

भारत एक गणतंत्र है। गणतंत्र एक ऐसा देश होता है जहाँ राष्ट्र के लिए निर्णय लेने की शक्ति एक राजा या एक सम्राट के बजाय जनता के द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों के पास होती है। भारत के संविधान का सिद्धांत हमेशा से जनता के लिए, जनता का और जनता द्वारा रहा है, जो कि साफ दर्शाता है कि देश के अहम अधिकार भारतीय नागरिकों के हाथों में निहित है। **– संपादक**

1. हमारा गणतंत्र दिवस 26 जनवरी को मनाया जाता है, क्योंकि भारत 26 जनवरी 1950 की तारीख को प्रजातांत्रिक गणतंत्र घोषित किया गया था। दुनिया का सबसे लंबा संविधान भारतीय संविधान है, जिसमें कई संशोधनों के बाद हाल के समय में 25 भाग, 465 अनुच्छेद और 12 अनुसूचियाँ हैं।

2. 26 जनवरी की परेड का आयोजन नई दिल्ली स्थित राजपथ (कर्तव्यपथ) पर किया जाता है। 1950 से 1954 तक राजपथ परेड का आयोजन केंद्र नहीं था। इन वर्षों के दौरान, परेड क्रमशः इरविन स्टेडियम (अब नेशनल स्टेडियम), किंग्सवे, लाल किला और रामलीला मैदान में आयोजित की गई थी। 1955 ई. से राजपथ परेड का स्थायी स्थल बन गया। राजपथ को उस समय 'किंग्सवे' नाम से जाना जाता था, जिसे अब कर्तव्यपथ के नाम से जाना जाता है।

3. हर साल 26 जनवरी की परेड के लिए किसी भी देश के प्रधानमंत्री/राष्ट्रपति/या शासक को अतिथि के रूप में आमंत्रित किया जाता है। पहली परेड 26 जनवरी 1950 को आयोजित की गई थी, इसमें इंडोनेशिया के राष्ट्रपति डॉ. सुकर्णो को अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। हालांकि, 1955 में जब राजपथ पर पहली परेड आयोजित की गई थी, तो पाकिस्तान के गवर्नर-जनरल मलिक गुलाम मोहम्मद को आमंत्रित किया गया था।

4. परेड कार्यक्रम की शुरुआत राष्ट्रपति के आगमन के साथ होती है। सबसे पहले राष्ट्रपति के घुड़सवार अंगरक्षक राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देते हैं और इस दौरान राष्ट्रगान बजाया जाता है। और 21 तोपों की सलामी भी दी जाती है। लेकिन, क्या आप जानते हैं कि 21 तोपों से फायरिंग नहीं की जाती? इसके स्थान पर भारतीय सेना की 7 तोपें, जिन्हें 25 पान्डर्स के नाम से जाना जाता है, का उपयोग 3 राउंड फायरिंग के लिए किया जाता है। दिलचस्प तथ्य यह है कि बंदूक की सलामी का समय राष्ट्रगान बजाए जाने के समय से मेल खाता है। पहली फायरिंग राष्ट्रगान के शुरु होने पर होती है और आखिरी फायरिंग ठीक 52 सेकेंड के बाद होती है। ये तोपें 1941 में बनाई गई थीं और सेना के सभी औपचारिक कार्यक्रमों में शामिल होती हैं।

5. भारत की सैन्य शक्ति दिखाने वाले सभी टैंकों, बख्तरबंद वाहनों और आधुनिक उपकरणों के लिए इंडिया गेट के परिसर के पास एक विशेष शिविर का आयोजन किया जाता है। प्रत्येक तोप की जाँच प्रक्रिया और सफेदी का काम ज्यादातर 10 चरणों में किया जाता है।

6. परेड के आयोजन में भाग लेने वाले प्रत्येक सेना के जवान को 4 स्तरों की जाँच से गुजरना पड़ता है। इसके अलावा, उनके हथियारों की गहन जाँच की जाती है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उनके हथियारों में जिंदा गोलियाँ तो नहीं भरी हुई हैं।

7. इस आयोजन का सबसे आकर्षक हिस्सा फ्लाईपास्ट है। फ्लाईपास्ट की जिम्मेदारी पश्चिमी वायु सेना कमान पर है, जिसमें लगभग 41 विमानों की भागीदारी शामिल है। परेड में शामिल विमान वायुसेना के अलग-अलग केंद्रों से उड़ान भरकर तय समय पर कर्तव्यपथ पर पहुँचते हैं।

8. परेड में भाग लेने वाले सेना के जवान स्वदेश निर्मित इंसास राइफलों के साथ मार्च करते हैं, जबकि विशेष सुरक्षा बल के जवान इजराइल में बनी टेवर राइफलों के साथ मार्च करते हैं।

स्वामी विवेकानंद के जीवन के प्रेरक प्रसंग

लक्ष्य पर ध्यान लगाओ

स्वामी विवेकानंद अमेरिका में भ्रमण कर रहे थे। एक जगह से गुजरते हुए उन्होंने पुल पर खड़े कुछ बच्चों को नदी में तैर रहे अंडे के छिलकों पर निशाना लगाते देखा। किसी भी लड़के का एक भी निशाना सही नहीं लग रहा था। तब वे स्वयं निशाना लगाने लगे। उनका पहला निशाना बिलकुल सही लगा, फिर एक के बाद एक उन्होंने कुल १२ निशाने लगाए और सभी बिलकुल सटीक लगे। ये देखकर बच्चे दंग रह गए और उनसे पूछा, 'भला आप ये कैसे कर लेते हैं?'

स्वामी जी बोले- 'तुम लोग जो भी काम करो अपना पूरा दिमाग उसी एक काम में लगाओ। अगर तुम निशाना लगा रहे हो, तो तुम्हारा ध्यान सिर्फ अपने लक्ष्य पर होना चाहिए। तभी तुम कभी चूकोगे नहीं।' अगर तुमने जीवन में कोई लक्ष्य बनाया है, तो अपना पूरा ध्यान अपने लक्ष्य पर ही केंद्रित करो।'

डर का सामना

एक बार बनारस में स्वामी विवेकानंद मंदिर से बाहर निकल रहे थे कि तभी वहाँ मौजूद बहुत सारे बंदरों ने उन्हें घेर लिया। वे उनके नजदीक आकर उनको डराने लगे। स्वामी जी भयभीत हो गए और स्वयं को बचाने के लिए दौड़ने लगे, पर बंदर तो मानो उनके पीछे ही पड़ गए। पास में खड़ा हुआ एक वृद्ध संन्यासी यह सब देख रहा था, उसने स्वामी जी को रोका और कहा, "रुको! उनका सामना करो।"

स्वामी जी तुरंत पलटे और बंदरों की तरफ बढ़ने लगे, ऐसा करते ही सभी बंदर भागने लगे। इस घटना से स्वामी जी को एक बड़ी सीख मिली और बाद में उन्होंने एक संबोधन में कहा, "यदि तुम किसी चीज से डरते हो, तो उससे भागो मत, पलट कर सामना करो। जब तक तुम उस डर का सामना नहीं करते, वह तुमको भयभीत करता रहेगा।"

स्वामी विवेकानंद के स्वप्नों का युवक ऐसा हो!

मुख मंडल तेजस्वी हो! वाणी ओजस्वी हो!
शरीर में शक्ति हो! मन में उत्साह हो!
सद्बुद्धि और विवेक हो! हृदय में करुणा हो!
मातृभूमि पर प्रेम हो! इंद्रियों पर संयम हो!
मन जिसका स्थिर हो! आत्मविश्वास दृढ़ हो!
इच्छाशक्ति प्रबल हो! साहसी शूरवीर हो!
सिंह जैसा निर्भय हो! लक्ष्य जिसका ऊँचा हो!
सत्य जिसका ईश्वर हो! व्यसनों से मुक्त हो!
जीवन में अनुशासन हो! मधुर प्रेममयी वाणी हो!
संपूर्ण जगत कुटुंब हो! गुरुजनों पर सम्मान हो!
माता-पिता पर श्रद्धा हो! मानवीय संवेदना हो!
दीन-दुखियों का मित्र हो! सेवा में सदा तत्पर हो!
ईश्वर में भक्ति हो! अचल देशभक्ति हो!
जीवन पूर्ण नैतिक हो! चरित्र जिसका शुद्ध हो!

पेड़ हमारे साथी हैं

पेड़ हमारे साथी हैं
छाया हमको देते हैं।
बाढ़ से हमें बचाते हैं,
मीठे फल भी देते हैं।
पेड़ कितने जरूरी हैं,
फिर भी बेचारे कटते हैं।
हम भी पेड़ लगाएँगे,
संसार को हरा-भरा बनाएँगे।

दो बकरियाँ

एक जंगल में एक नाले पर बड़े से पेड़ के गिर जाने की वजह से उस पर पुल का निर्माण हो गया था। अब वह पुल जंगल के प्राणियों के लिए यातायात के साधन के रूप में इस्तेमाल होने लगा। एक दिन एक बकरी ने उस पुल को पार करके दूसरे सिरे पर जाने की सोची इत्तेफाक से दूसरी तरफ से एक बकरी उसी पुल से इस तरफ आ रही थी। पुल इतना चौड़ा नहीं था कि दोनों बकरियाँ एक बार में उस पुल को पार कर पाती, लेकिन अपनी ताकत के घमंड में चूर दोनों बकरियों ने पीछे हटने से मना कर दिया। बीच में पहुँचते ही दोनों बकरियाँ आपस में लड़ने लगी और नाले में गिर गई और अपनी जान से हाथ धो बैठी।

नैतिक शिक्षा: अपनी ताकत पर घमंड न करें और हर जगह सिर्फ ताकत ही उपयोग नहीं करना चाहिए।